



Mr.Tushar

02 Apr 2011

12:05 PM

Gwalior

Model: Web-KundliPhal

Order No: 120157301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 02/04/2011
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 12:05:00 घंटे
इष्ट _____: 14:51:37 घटी
स्थान _____: Gwalior
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 26:12:00 उत्तर
रेखांश _____: 78:09:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:17:24 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 11:47:36 घंटे
वेलान्तर _____: -00:03:43 घंटे
साम्पातिक काल _____: 00:28:39 घंटे
सूर्योदय _____: 06:08:21 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:34:21 घंटे
दिनमान _____: 12:26:00 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 18:09:42 मीन
लग्न के अंश _____: 23:20:33 मिथुन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मिथुन - बुध
राशि-स्वामी _____: मीन - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: उ०भाद्रपद - 1
नक्षत्र स्वामी _____: शनि
योग _____: ब्रह्म
करण _____: शकुनि
गण _____: मनुष्य
योनि _____: गौ
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: दू-दूधेश्वर
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - लौह
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मेष



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1933	चैत्र	12
पंजाबी	संवत : 2067	चैत्र	20
बंगाली	सन् : 1417	चैत्र	18
तमिल	संवत : 2067	पंगुनी	19
केरल	कोल्लम : 1186	मीनम	19
नेपाली	संवत : 2067	चैत्र	19
चैत्रादि	संवत : 2067	चैत्र	कृष्ण 14
कार्तिकादि	संवत : 2067	फाल्गुन	कृष्ण 14

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 14
 तिथि समाप्ति काल _____ : 17:35:03
 जन्म तिथि _____ : 14
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पू०भाद्रपद
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 11:24:12 घंटे
 जन्म योग _____ : उ०भाद्रपद
 सूर्योदय कालीन योग _____ : शुक्ल
 योग समाप्ति काल _____ : 08:39:44 घंटे
 जन्म योग _____ : ब्रह्म
 सूर्योदय कालीन करण _____ : शकुनि
 करण समाप्ति काल _____ : 17:35:03 घंटे
 जन्म करण _____ : शकुनि
 भयात _____ : 01:42:01
 भोग _____ : 67:24:32
 भोग्य दशा काल _____ : शनि 18 वर्ष 6 मा 7 दि

घात चक्र

मास _____ : फाल्गुन
 तिथि _____ : 5-10-15
 दिन _____ : शुक्रवार
 नक्षत्र _____ : आश्लेषा
 योग _____ : वज्र
 करण _____ : चतुष्पाद
 प्रहर _____ : 4
 वर्ग _____ : गरुड़
 लग्न _____ : सिंह
 सूर्य _____ : मिथुन
 चन्द्र _____ : कुम्भ
 मंगल _____ : कर्क
 बुध _____ : कुम्भ
 गुरु _____ : सिंह
 शुक्र _____ : कन्या
 शनि _____ : वृष
 राहु _____ : तुला

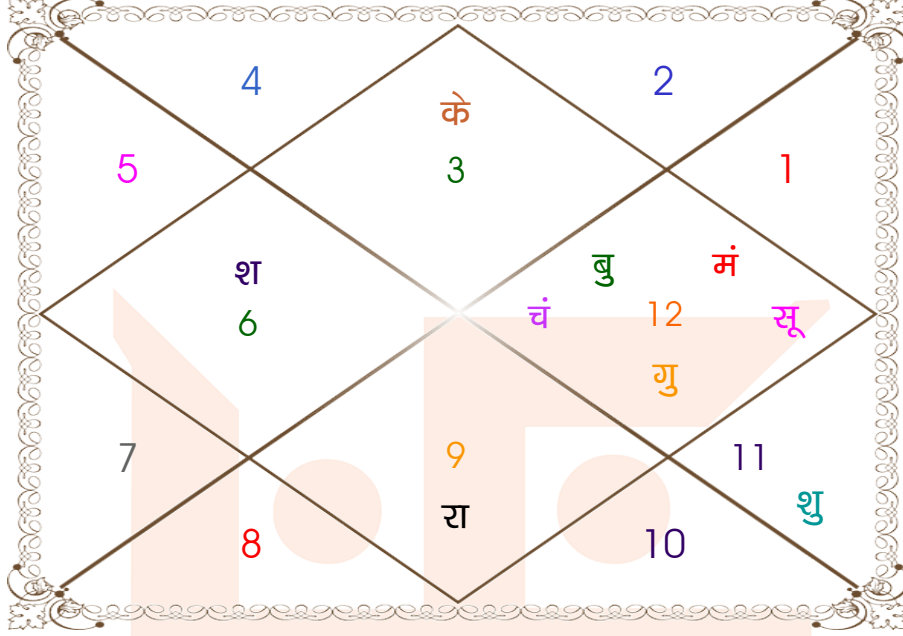


FUTUREPOINT
 Astro Solutions

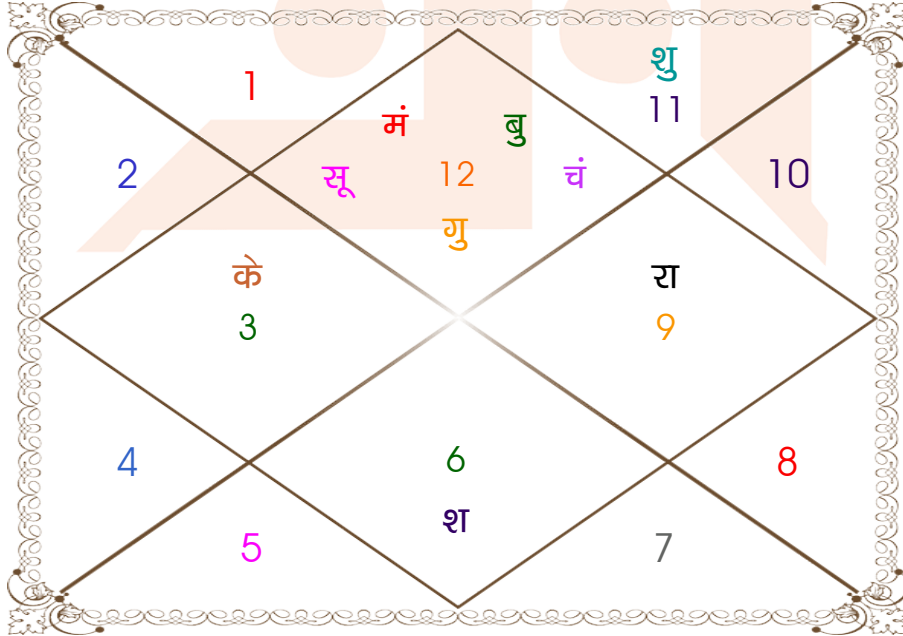


जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

मं	चं		ल
सू	बु		के
गु			
शु			
रा			श

लग्न कुण्डली

के		मं	बु
ल		चं	गु
		सू	शु
श			रा

विंशोत्तरी
शनि 18वर्ष 6मा 7दि
शनि

02/04/2011

10/10/2130

शनि	09/10/2029
बुध	09/10/2046
केतु	09/10/2053
शुक्र	09/10/2073
सूर्य	09/10/2079
चन्द्र	09/10/2089
मंगल	09/10/2096
राहु	10/10/2114
गुरु	10/10/2130

योगिनी
भद्रिका 4वर्ष 10मा 14दि
सिद्धा

15/02/2022

14/02/2029

सिद्धा	27/06/2023
संकटा	15/01/2025
मंगला	27/03/2025
पिंगला	16/08/2025
धान्या	17/03/2026
भ्रामरी	26/12/2026
भद्रिका	16/12/2027
उल्का	14/02/2029



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

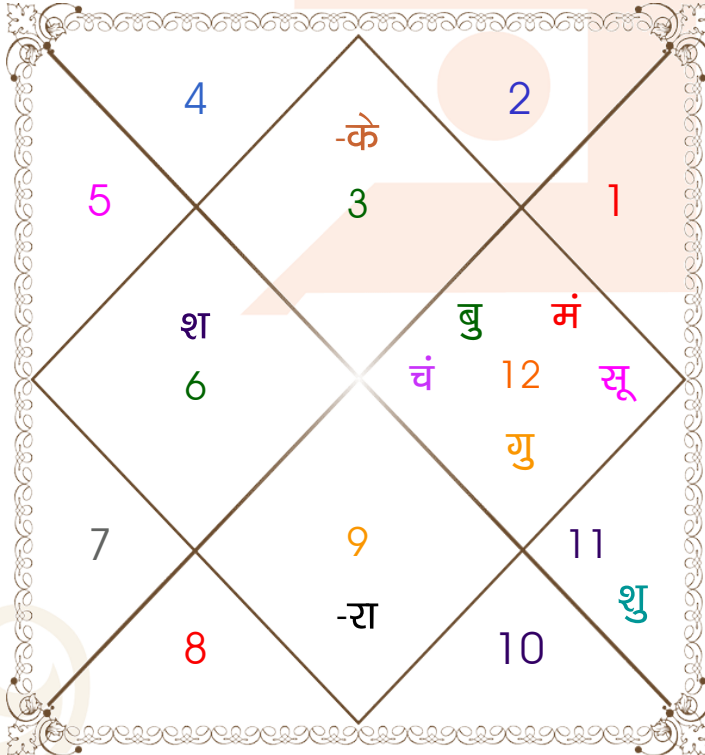
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मिथु	23:20:33	314:33:14	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	शनि	---
सूर्य			मीन	18:09:42	00:59:13	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	मित्र राशि
चंद्र			मीन	03:40:10	11:51:33	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	सम राशि
मंगल		अ	मीन	06:02:15	00:46:47	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	मित्र राशि
बुध		व	मीन	29:59:46	00:16:40	रेवती	4	27	गुरु	बुध	शनि	नीच राशि
गुरु		अ	मीन	21:23:15	00:14:31	रेवती	2	27	गुरु	बुध	शुक्र	स्वराशि
शुक्र			कुंभ	13:10:47	01:12:13	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	बुध	मित्र राशि
शनि		व	कन्या	19:59:44	00:04:40	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	केतु	मित्र राशि
राहु		व	धनु	02:35:26	00:13:57	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	नीच राशि
केतु		व	मिथु	02:35:26	00:13:57	मृगशिरा	3	5	बुध	मंगल	केतु	नीच राशि
हर्ष			मीन	07:11:25	00:03:23	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	बुध	---
नेप			कुंभ	05:54:46	00:01:48	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	चंद्र	---
प्लूटो			धनु	13:28:32	00:00:13	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	---
दशम भाव			मीन	13:47:04	--	उ०भाद्रपद	--	26	गुरु	शनि	राहु	--

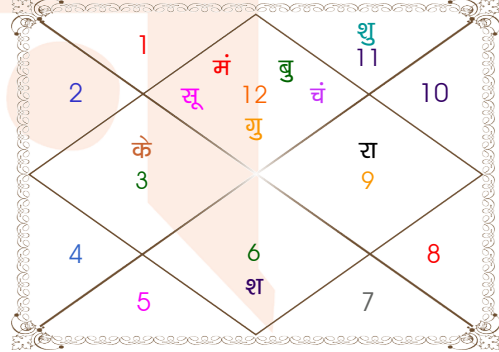
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:01:08

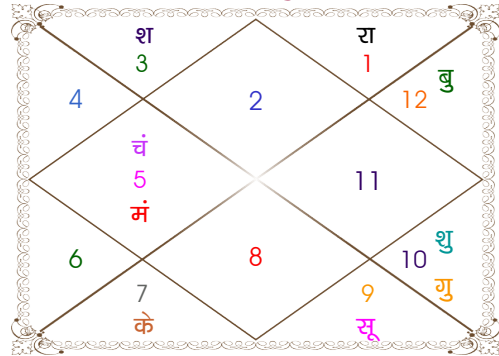
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मिथुन 06:44:58	मिथुन 23:20:33
2	कर्क 06:44:58	कर्क 20:09:23
3	सिंह 03:33:48	सिंह 16:58:14
4	कन्या 00:22:39	कन्या 13:47:04
5	तुला 00:22:39	तुला 16:58:14
6	वृश्चिक 03:33:48	वृश्चिक 20:09:23
7	धनु 06:44:58	धनु 23:20:33
8	मकर 06:44:58	मकर 20:09:23
9	कुम्भ 03:33:48	कुम्भ 16:58:14
10	मीन 00:22:39	मीन 13:47:04
11	मेष 00:22:39	मेष 16:58:14
12	वृष 03:33:48	वृष 20:09:23

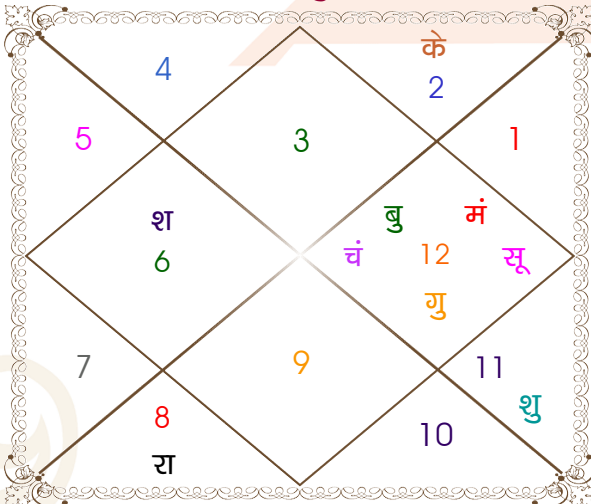
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मिथुन	23:20:33
2	कर्क	16:39:57
3	सिंह	12:54:24
4	कन्या	13:47:04
5	तुला	18:12:21
6	वृश्चिक	22:15:39
7	धनु	23:20:33
8	मकर	16:39:57
9	कुम्भ	12:54:24
10	मीन	13:47:04
11	मेष	18:12:21
12	वृष	22:15:39

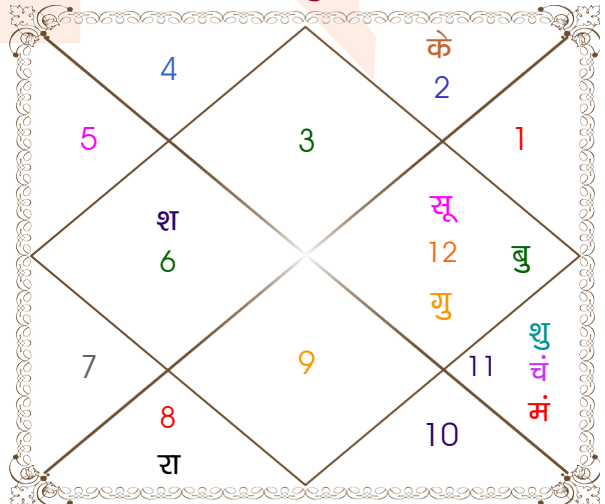
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



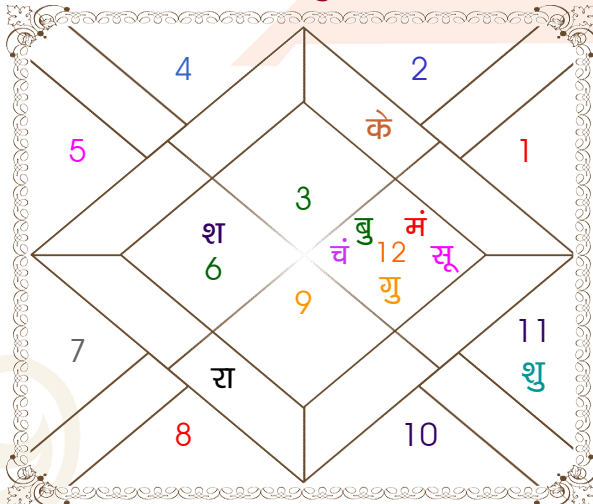
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----					
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	मातृ	पितृ	कुमार	मुदित	शयन	8.79	79 %
चंद्र	कलत्र	मातृ	मृत	निपीदित	नेत्रपाणि	3.02	62 %
मंगल	ज्ञाति	भातृ	वृद्ध	विकल	सभा	0.00	44 %
बुध	आत्मा	ज्ञाति	बाल	भीत	सभा	0.21	24 %
गुरु	अमात्य	धन	कुमार	विकल	प्रकाश	0.00	44 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	युवा	मुदित	सभा	6.05	26 %
शनि	भातृ	आयु	कुमार	मुदित	शयन	4.17	53 %
राहु	---	ज्ञान	बाल	भीत	नेत्रपाणि	0.00	25 %
केतु	---	मोक्ष	बाल	भीत	प्रकाश	0.00	0 %
कुल						22.23	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद

चलित कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 18 वर्ष 6 मास 7 दिन

शनि 19 वर्ष 02/04/2011 09/10/2029	बुध 17 वर्ष 09/10/2029 09/10/2046	केतु 7 वर्ष 09/10/2046 09/10/2053	शुक्र 20 वर्ष 09/10/2053 09/10/2073	सूर्य 6 वर्ष 09/10/2073 09/10/2079
शनि 12/10/2013	बुध 07/03/2032	केतु 07/03/2047	शुक्र 07/02/2057	सूर्य 26/01/2074
बुध 21/06/2016	केतु 04/03/2033	शुक्र 06/05/2048	सूर्य 08/02/2058	चंद्र 28/07/2074
केतु 31/07/2017	शुक्र 03/01/2036	सूर्य 11/09/2048	चंद्र 09/10/2059	मंगल 03/12/2074
शुक्र 29/09/2020	सूर्य 08/11/2036	चंद्र 12/04/2049	मंगल 08/12/2060	राहु 28/10/2075
सूर्य 11/09/2021	चंद्र 09/04/2038	मंगल 08/09/2049	राहु 09/12/2063	गुरु 15/08/2076
चंद्र 13/04/2023	मंगल 07/04/2039	राहु 27/09/2050	गुरु 09/08/2066	शनि 28/07/2077
मंगल 22/05/2024	राहु 24/10/2041	गुरु 03/09/2051	शनि 09/10/2069	बुध 03/06/2078
राहु 29/03/2027	गुरु 30/01/2044	शनि 12/10/2052	बुध 09/08/2072	केतु 09/10/2078
गुरु 09/10/2029	शनि 09/10/2046	बुध 09/10/2053	केतु 09/10/2073	शुक्र 09/10/2079

चंद्र 10 वर्ष 09/10/2079 09/10/2089	मंगल 7 वर्ष 09/10/2089 09/10/2096	राहु 18 वर्ष 09/10/2096 10/10/2114	गुरु 16 वर्ष 10/10/2114 10/10/2130	शनि 19 वर्ष 10/10/2130 00/00/0000
चंद्र 09/08/2080	मंगल 07/03/2090	राहु 22/06/2099	गुरु 27/11/2116	शनि 03/04/2131
मंगल 10/03/2081	राहु 26/03/2091	गुरु 15/11/2101	शनि 11/06/2119	00/00/0000
राहु 09/09/2082	गुरु 29/02/2092	शनि 21/09/2104	बुध 16/09/2121	00/00/0000
गुरु 09/01/2084	शनि 09/04/2093	बुध 11/04/2107	केतु 22/08/2122	00/00/0000
शनि 09/08/2085	बुध 06/04/2094	केतु 28/04/2108	शुक्र 22/04/2125	00/00/0000
बुध 08/01/2087	केतु 03/09/2094	शुक्र 29/04/2111	सूर्य 09/02/2126	00/00/0000
केतु 09/08/2087	शुक्र 03/11/2095	सूर्य 23/03/2112	चंद्र 11/06/2127	00/00/0000
शुक्र 09/04/2089	सूर्य 10/03/2096	चंद्र 22/09/2113	मंगल 17/05/2128	00/00/0000
सूर्य 09/10/2089	चंद्र 09/10/2096	मंगल 10/10/2114	राहु 10/10/2130	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 18 वर्ष 6 मा 7 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - राहु 22/05/2024 29/03/2027	शनि - गुरु 29/03/2027 09/10/2029	बुध - बुध 09/10/2029 07/03/2032	बुध - केतु 07/03/2032 04/03/2033	बुध - शुक्र 04/03/2033 03/01/2036
राहु 25/10/2024 गुरु 13/03/2025 शनि 24/08/2025 बुध 19/01/2026 केतु 21/03/2026 शुक्र 10/09/2026 सूर्य 01/11/2026 चंद्र 27/01/2027 मंगल 29/03/2027	गुरु 30/07/2027 शनि 23/12/2027 बुध 03/05/2028 केतु 26/06/2028 शुक्र 27/11/2028 सूर्य 12/01/2029 चंद्र 30/03/2029 मंगल 23/05/2029 राहु 09/10/2029	बुध 10/02/2030 केतु 03/04/2030 शुक्र 27/08/2030 सूर्य 10/10/2030 चंद्र 23/12/2030 मंगल 12/02/2031 राहु 24/06/2031 गुरु 19/10/2031 शनि 07/03/2032	केतु 28/03/2032 शुक्र 27/05/2032 सूर्य 14/06/2032 चंद्र 14/07/2032 मंगल 04/08/2032 राहु 28/09/2032 गुरु 15/11/2032 शनि 11/01/2033 बुध 04/03/2033	शुक्र 23/08/2033 सूर्य 14/10/2033 चंद्र 08/01/2034 मंगल 10/03/2034 राहु 12/08/2034 गुरु 28/12/2034 शनि 10/06/2035 बुध 03/11/2035 केतु 03/01/2036
बुध - सूर्य 03/01/2036 08/11/2036	बुध - चंद्र 08/11/2036 09/04/2038	बुध - मंगल 09/04/2038 07/04/2039	बुध - राहु 07/04/2039 24/10/2041	बुध - गुरु 24/10/2041 30/01/2044
सूर्य 18/01/2036 चंद्र 13/02/2036 मंगल 02/03/2036 राहु 18/04/2036 गुरु 29/05/2036 शनि 17/07/2036 बुध 30/08/2036 केतु 17/09/2036 शुक्र 08/11/2036	चंद्र 21/12/2036 मंगल 20/01/2037 राहु 08/04/2037 गुरु 16/06/2037 शनि 06/09/2037 बुध 18/11/2037 केतु 18/12/2037 शुक्र 15/03/2038 सूर्य 09/04/2038	मंगल 01/05/2038 राहु 24/06/2038 गुरु 11/08/2038 शनि 08/10/2038 बुध 28/11/2038 केतु 19/12/2038 शुक्र 17/02/2039 सूर्य 08/03/2039 चंद्र 07/04/2039	राहु 24/08/2039 गुरु 27/12/2039 शनि 22/05/2040 बुध 01/10/2040 केतु 24/11/2040 शुक्र 29/04/2041 सूर्य 14/06/2041 चंद्र 31/08/2041 मंगल 24/10/2041	गुरु 11/02/2042 शनि 23/06/2042 बुध 18/10/2042 केतु 05/12/2042 शुक्र 22/04/2043 सूर्य 03/06/2043 चंद्र 11/08/2043 मंगल 28/09/2043 राहु 30/01/2044
बुध - शनि 30/01/2044 09/10/2046	केतु - केतु 09/10/2046 07/03/2047	केतु - शुक्र 07/03/2047 06/05/2048	केतु - सूर्य 06/05/2048 11/09/2048	केतु - चंद्र 11/09/2048 12/04/2049
शनि 04/07/2044 बुध 20/11/2044 केतु 16/01/2045 शुक्र 29/06/2045 सूर्य 17/08/2045 चंद्र 07/11/2045 मंगल 04/01/2046 राहु 31/05/2046 गुरु 09/10/2046	केतु 18/10/2046 शुक्र 12/11/2046 सूर्य 19/11/2046 चंद्र 02/12/2046 मंगल 10/12/2046 राहु 02/01/2047 गुरु 22/01/2047 शनि 14/02/2047 बुध 07/03/2047	शुक्र 17/05/2047 सूर्य 08/06/2047 चंद्र 13/07/2047 मंगल 07/08/2047 राहु 10/10/2047 गुरु 06/12/2047 शनि 11/02/2048 बुध 12/04/2048 केतु 06/05/2048	सूर्य 13/05/2048 चंद्र 23/05/2048 मंगल 31/05/2048 राहु 19/06/2048 गुरु 06/07/2048 शनि 26/07/2048 बुध 13/08/2048 केतु 21/08/2048 शुक्र 11/09/2048	चंद्र 29/09/2048 मंगल 11/10/2048 राहु 12/11/2048 गुरु 11/12/2048 शनि 14/01/2049 बुध 13/02/2049 केतु 25/02/2049 शुक्र 02/04/2049 सूर्य 12/04/2049

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - मंगल 12/04/2049 08/09/2049	केतु - राहु 08/09/2049 27/09/2050	केतु - गुरु 27/09/2050 03/09/2051	केतु - शनि 03/09/2051 12/10/2052	केतु - बुध 12/10/2052 09/10/2053
मंगल 21/04/2049 राहु 13/05/2049 गुरु 02/06/2049 शनि 26/06/2049 बुध 17/07/2049 केतु 26/07/2049 शुक्र 20/08/2049 सूर्य 27/08/2049 चंद्र 08/09/2049	राहु 05/11/2049 गुरु 26/12/2049 शनि 25/02/2050 बुध 20/04/2050 केतु 13/05/2050 शुक्र 15/07/2050 सूर्य 04/08/2050 चंद्र 05/09/2050 मंगल 27/09/2050	गुरु 11/11/2050 शनि 04/01/2051 बुध 22/02/2051 केतु 14/03/2051 शुक्र 09/05/2051 सूर्य 26/05/2051 चंद्र 24/06/2051 मंगल 14/07/2051 राहु 03/09/2051	शनि 06/11/2051 बुध 02/01/2052 केतु 26/01/2052 शुक्र 02/04/2052 सूर्य 23/04/2052 चंद्र 26/05/2052 मंगल 19/06/2052 राहु 19/08/2052 गुरु 12/10/2052	बुध 02/12/2052 केतु 23/12/2052 शुक्र 21/02/2053 सूर्य 12/03/2053 चंद्र 11/04/2053 मंगल 02/05/2053 राहु 25/06/2053 गुरु 13/08/2053 शनि 09/10/2053
शुक्र - शुक्र 09/10/2053 07/02/2057	शुक्र - सूर्य 07/02/2057 08/02/2058	शुक्र - चंद्र 08/02/2058 09/10/2059	शुक्र - मंगल 09/10/2059 08/12/2060	शुक्र - राहु 08/12/2060 09/12/2063
शुक्र 30/04/2054 सूर्य 30/06/2054 चंद्र 09/10/2054 मंगल 19/12/2054 राहु 20/06/2055 गुरु 29/11/2055 शनि 09/06/2056 बुध 28/11/2056 केतु 07/02/2057	सूर्य 26/02/2057 चंद्र 28/03/2057 मंगल 18/04/2057 राहु 12/06/2057 गुरु 31/07/2057 शनि 27/09/2057 बुध 17/11/2057 केतु 09/12/2057 शुक्र 08/02/2058	चंद्र 30/03/2058 मंगल 05/05/2058 राहु 04/08/2058 गुरु 24/10/2058 शनि 29/01/2059 बुध 25/04/2059 केतु 30/05/2059 शुक्र 09/09/2059 सूर्य 09/10/2059	मंगल 03/11/2059 राहु 06/01/2060 गुरु 03/03/2060 शनि 09/05/2060 बुध 09/07/2060 केतु 03/08/2060 शुक्र 13/10/2060 सूर्य 03/11/2060 चंद्र 08/12/2060	राहु 22/05/2061 गुरु 15/10/2061 शनि 06/04/2062 बुध 09/09/2062 केतु 12/11/2062 शुक्र 13/05/2063 सूर्य 07/07/2063 चंद्र 06/10/2063 मंगल 09/12/2063
शुक्र - गुरु 09/12/2063 09/08/2066	शुक्र - शनि 09/08/2066 09/10/2069	शुक्र - बुध 09/10/2069 09/08/2072	शुक्र - केतु 09/08/2072 09/10/2073	सूर्य - सूर्य 09/10/2073 26/01/2074
गुरु 17/04/2064 शनि 18/09/2064 बुध 03/02/2065 केतु 01/04/2065 शुक्र 10/09/2065 सूर्य 29/10/2065 चंद्र 18/01/2066 मंगल 16/03/2066 राहु 09/08/2066	शनि 08/02/2067 बुध 22/07/2067 केतु 28/09/2067 शुक्र 07/04/2068 सूर्य 04/06/2068 चंद्र 09/09/2068 मंगल 15/11/2068 राहु 08/05/2069 गुरु 09/10/2069	बुध 04/03/2070 केतु 04/05/2070 शुक्र 23/10/2070 सूर्य 14/12/2070 चंद्र 10/03/2071 मंगल 10/05/2071 राहु 12/10/2071 गुरु 27/02/2072 शनि 09/08/2072	केतु 03/09/2072 शुक्र 13/11/2072 सूर्य 04/12/2072 चंद्र 08/01/2073 मंगल 02/02/2073 राहु 07/04/2073 गुरु 03/06/2073 शनि 09/08/2073 बुध 09/10/2073	सूर्य 14/10/2073 चंद्र 23/10/2073 मंगल 30/10/2073 राहु 15/11/2073 गुरु 30/11/2073 शनि 17/12/2073 बुध 02/01/2074 केतु 08/01/2074 शुक्र 26/01/2074

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	1
मित्र अंक	2, 7, 8, 1
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20, 29, 38, 47, 56
शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी



FUTUREPOINT
Astro Solutions

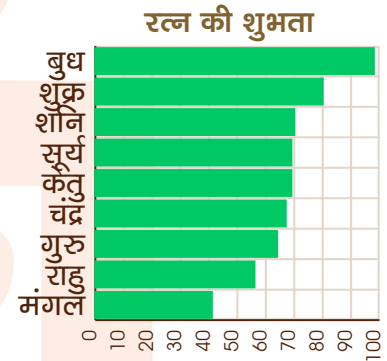


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	98%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य, सुख
हीरा	शुक्र	80%	भाग्योदय, कम खर्च, सन्तति सुख
नीलम	शनि	70%	सुख, दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
माणिक्य	सूर्य	69%	व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
लहसुनिया	केतु	69%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	67%	व्यावसायिक उन्नति, धन
पुखराज	गुरु	64%	व्यावसायिक उन्नति, दम्पति
गोमेद	राहु	56%	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	41%	व्यावसायिक हानि, हानि, शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	09/10/2029	56%	55%	16%	100%	64%	86%	83%	62%	56%
बुध	09/10/2046	75%	55%	41%	100%	64%	86%	70%	56%	69%
केतु	09/10/2053	56%	55%	52%	98%	64%	86%	58%	38%	81%
शुक्र	09/10/2073	56%	55%	41%	100%	64%	92%	77%	62%	75%
सूर्य	09/10/2079	81%	73%	52%	98%	70%	67%	58%	38%	56%
चंद्र	09/10/2089	75%	80%	41%	100%	64%	80%	70%	38%	56%
मंगल	09/10/2096	75%	73%	58%	86%	70%	80%	70%	38%	75%
राहु	10/10/2114	56%	55%	16%	98%	64%	86%	77%	69%	56%
गुरु	10/10/2130	75%	73%	52%	86%	76%	67%	70%	56%	69%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए पन्ना व हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

हीरा आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए नीलम, माणिक्य, लहसुनिया, मोती, पुखराज एवं गोमेद रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम हैं। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मूंगा रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परीक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध दशम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपकी न्यायप्रियता और नीतिनिपुणता में वृद्धि करेगा। रत्न शुभता आपको

विवेकवान। गुणवान और सत्यवादी व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपके धैर्य और विनम्रता को बढ़ाएगा। परिस्थिति अनुसार बोलने का कौशल यह रत्न पन्ना आपको दे सकता है। रत्न प्रभाव आपको यशस्वी और व्यवहार कुशल बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आपको विभिन्न प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त होगा। रत्न शुभता आपको धनाढ्य और संपत्तिवान बनाएगी। व्यापार के माध्यम से लाभ, सफलता दोनों देगा।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में बुध लग्नेश एवं चतुर्थेश होते हैं। लग्नेश बुध का रत्न पन्ना आपके लिए जीवन रत्न के समान कार्य करेगा। पन्ना रत्न आपको उत्तम स्वास्थ्य, बौद्धिक योग्यता दे सकता है। पन्ना रत्न शुभता से आपके स्वास्थ्य सुख में वृद्धि होगी। बुध आपके लिए चतुर्थेश है इसलिए पन्ना रत्न धारण करने से मातृ पक्ष एवं भू-संपत्ति पक्ष बलवान हो सकता है। यह रत्न आपको विनोदी, बुद्धिमान एवं गणितीय कौशल को भी बढ़ायेगा। पन्ना रत्न की शुभता से आप दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता दे सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न ३ रत्ती का कम से कम, अन्यथा ६ रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र नवम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ फलकारी रहेगा। हीरा रत्न धारण से आप धार्मिक, शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान व्यक्ति बनेंगे। रत्न प्रभाव से आपका धार्मिक विश्वास बढ़ेगा। पवित्र तीर्थ यात्राओं के आपको पर्याप्त अवसर मिलेंगे। हीरा रत्न आपको शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान बनाएगा। हीरा रत्न दयालु, उदार, संतोषी जैसे गुणों से युक्त कर आपकी रुचि गायन, वादन और सिनेमा जैसी ललित कलाओं में आपकी सहभागिता बनाएगा। यह रत्न आपको एक अच्छा अभिनेता, काव्य नाटक पढ़ने वाले और विद्या अध्ययन में निपुण बनाएगा।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में शुक्र पंचमेश एवं द्वादशेश है। शुक्र लग्नेश बुध के मित्र भी है। त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण शुभ ग्रह है। शुक्र ग्रह की शुभता को बढ़ाने के लिए आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न आपको संतान से सुखी, विद्वान बना सकता है। हीरा रत्न प्रभाव से आप को विदेश जाने के अवसर, व्ययों पर नियंत्रण लगायें रखने में सफल हो सकते हैं। शुक्र रत्न हीरे से आप भोगविलास के आदी नहीं होंगे। यह रत्न आपके दांपत्य जीवन को सुखमय बनाए रखने में सहयोगी हो सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा १ रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपको धैर्य संपन्न और लोभरहित रखेगा। इस रत्न के प्रभाव से आप व्यसनहीन, न्यायप्रिय और अतिथियों का सत्कार करने वाले व्यक्ति बनेंगे। आपको प्रचुर मात्रा में धन की प्राप्ति होगी। नीलम रत्न शीघ्र फल देने वाला रत्न है। रत्न के फलस्वरूप आपके पास विभिन्न प्रकार के वाहन होंगे। जन्मस्थान से दूर रहकर आपको तरक्की की प्राप्ति होगी। नौकरी, विवाह, संतान आदि के लिए भी यह रत्न आपके अनुकूल सिद्ध होगा।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में शनि नवमेश एवं अष्टमेश है। नवमेश शनि का रत्न नीलम धारण कर आप अपने भाग्य में वृद्धि कर सकते हैं। नीलम रत्न आपको माता-पिता का सुख प्रदान करेगा। रत्न शुभता से आपको भूमि व संपत्ति से लाभ दे सकता है। शनि रत्न नीलम अष्टमेश का रत्न है इसलिए इस रत्न को धारण कर आप अप्रत्याशित लाभ प्राप्त कर सकते हैं। नीलम रत्न आपको शत्रुओं पर हावी रख सकता है। यह रत्न आपको भाग्यवान बना सकता है। यह रत्न आपको शारीरिक कष्टों से बचा सकता है। साथ ही यह रत्न आपके शारीरिक बल में भी वृद्धि कर सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम ३ रत्ती, अन्यथा ५-६ रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य दशम भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपको बुद्धिमान, विद्वान और प्रसिद्ध बनाएगा। इसकी शुभता से आप आत्मविश्वास से भरे हुए आर्थिक रूप से सुदृढ़ व्यक्ति होंगे। रत्न शक्तियां आपको कार्यक्षेत्र में अधिकारिक शक्तियां प्राप्त करने में सहयोग करेंगी। आपको सरकारी क्षेत्र में नौकरी प्राप्त हो सकती है। आजीविका क्षेत्र में भी आपको उच्चाधिकारियों का सुख-सहयोग सहजता से प्राप्त होगा। यह रत्न आपको कार्यक्षेत्र में बड़ी सफलता दिला सकता है। रत्न शुभता से नेतृत्व करने की अद्भुत योग्यता सामने आयेगी।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में सूर्य तृतीय भाव का स्वामी है। पराक्रमेश सूर्य का माणिक्य रत्न धारण कर आप अपने पुरुषार्थ से अपने अधिकारिक शक्तियों में बढ़ोतरी कर सकते हैं। माणिक्य रत्न धारण बाहुबल द्वारा धन व परिवार में वृद्धि, भाई-बहनों से सुख प्राप्त करा सकता है। माणिक्य की शुभता आपको धनी, साहसी, प्रभावशाली व्यक्तित्व भी प्रदान कर सकती है। इस रत्न को धारण कर आप यात्राओं में सुख का अनुभव करेंगे। सूर्य की सभी शुभता प्राप्त करने के लिए आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु लग्न भाव में स्थित है। इसलिए आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण करने से आप परिश्रमी और कर्मठ बनेंगे। लहसुनिया रत्न आपकी मेहनत एवं लगन योग्यता को बढ़ायेगा। लग्न भाव में बैठकर केतु सप्तम भाव से संबंध बना रहे हैं इसके प्रभाव से केतु रत्न लहसुनिया आपके ग्रहस्थ जीवन को सुख-सौहार्द पूर्ण बनायेगा। लहसुनिया रत्न आपके साहस भाव में बढ़ोतरी करेगा।

केतु मिथुन राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध दशम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण कर आप आजीविका क्षेत्र में चातुर्य से उन्नति प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको कर्मक्षेत्र में उच्च पद, सम्मान एवं अधिकार शक्ति देगा तथा रत्न पहन कर आप व्यवहार

कुशल होंगे। रत्न शुभता से आप धनवान, बुद्धिमान और पितृ-सुखयुक्त होंगे। यह रत्न आपको आजीविका क्षेत्र में व्यर्थ विवादों में सम्मिलित होने से बचाएगा। इस रत्न को धारण करने से आपको अधीनस्थों का सुख-सहयोग प्राप्त होगा। तथा यह रत्न आपके कार्यभार में कमी करेगा। आपके कार्यों में नियमितता आएगी। न्याय और परिश्रम कुशलता में वृद्धि होगी। आपको उत्तम व्यक्तियों के संपर्क में रहने के अवसर प्राप्त होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल 'केट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र दशम भाव में स्थित है। आपके लिए चंद्र रत्न मोती धारण करना शुभ रहेगा। यह रत्न आपको समाज में प्रतिष्ठा देगा। यह रत्न आपको सफलता तो देगा ही साथ ही लोगों की बीच आपकी लोकप्रियता भी बढ़ायेगा। मोती रत्न कार्यकुशलता में निखार लायेगा। जीवन में बड़ी सफलता देगा। रत्न शुभता से आप दयालु, निर्मल, लोकहित कारक एवं संतोषी व्यक्ति बनेंगे। व्यापार और व्यवसाय में सफलता देगा। आपको उच्चामहत्वांक्षी बनाकर उच्च पद प्रदान करेगा।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में चंद्र दूसरे भाव के स्वामी है। चंद्र लग्नेश बुध का मित्र भी है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण कर आप चंद्र शुभता प्राप्त कर सकते हैं। मोती रत्न आपको शारीरिक बल तथा मानसिक शक्तियों द्वारा धन व कुटुम्ब से सुखी रख सकता है। मोती रत्न की शुभता से आप धनी, सुखी एवं सम्मानित व्यक्ति बन सकते हैं। मोती चंद्र द्वितीयेश का रत्न होने के कारण आपको सुन्दर व सुशील जीवन साथी, दांपत्य जीवन में मधुरता देगा। इसके साथ ही इस रत्न को आप दैनिक व्यवसाय में सफलता के लिए भी धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूठी में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौ सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु दशम भाव में स्थित है। आपके लिए गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करना आपके लिए शुभदायक रहेगा। यह रत्न आपको चरित्रवान और स्वतंत्र विचारक बनाएगा। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको विवेकी, न्यायी और सत्यवादी भी बनाएगा। पुखराज रत्न की शुभता आपको शास्त्रों का विधिवत ज्ञान होगा। पुखराज रत्न आपको उत्तम वाहनों का सुख देगा। भूमि सुख और भूमि के माध्यम से खूब लाभ देगा। रत्न प्रभाव से आप अपने माता-पिता का अत्यधिक आदर करने वाले बनेंगे। आप खूब धन कमाकर, ऐश्वर्यवान, सुखी और समृद्ध बनेंगे। आप सुंदर वस्त्र और आभूषणों से युक्त होंगे।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में गुरु सप्तमेश एवं दशमेश है। गुरु की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आप पुखराज रत्न धारण करें। पुखराज रत्न धारण करने से आपके जीवन के सुखों में बढ़ोतरी हो सकती है। यह रत्न आपको स्वाभिमानी, उच्च मनोबल, पिता सुख, कार्यक्षेत्र में लाभ दे सकता है। सप्तमेश का रत्न होने के कारण पुखराज आपका दांपत्य जीवन सुखी, भाग्य वृद्धि व धर्म के क्षेत्र में सम्मान दे सकता है। गुरु रत्न की शुभता से आपको आजीविका क्षेत्र में पद और धन दोनों की प्राप्ति हो सकती है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूठी में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ वृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्नी से लेकर ८ रत्नी का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु सप्तम भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। गोमेद रत्न आपको स्वतंत्र व्यापार करने की ओर प्रेरित कर रहा है। रत्न शुभता से आपका कार्य कौशल चतुराई से परिपूर्ण रहेगा। आपका विवाह अपेक्षाकृत शीघ्र या विलम्ब से हो सकता है। गोमेद रत्न के प्रभाव से आपका अपने जीवनसाथी के मध्य प्रेम संबंध अनुकूल रहेगा। नौकरी के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए आपको गोमेद रत्न धारण करना चाहिए। यह रत्न आपके स्वभाव की उग्रता को नियंत्रित रखेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



राहु धनु राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु दशम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण कर आप आजीविका क्षेत्र में चातुर्य से उन्नति प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको कर्मक्षेत्र में उच्च पद, सम्मान एवं अधिकार शक्ति देगा तथा रत्न पहन कर आप व्यवहार कुशल होंगे। रत्न शुभता से आप धनवान, बुद्धिमान और पितृ-सुखयुक्त होंगे। यह रत्न आपको आजीविका क्षेत्र में व्यर्थ विवादों में सम्मिलित होने से बचाएगा। इस रत्न को धारण करने से आपको अधीनस्थों का सुख-सहयोग प्राप्त होगा। तथा यह रत्न आपके कार्यभार में कमी करेगा। आपके कार्यों में नियमितता आएगी। न्याय और परिश्रम कुशलता में वृद्धि होगी। आपको उत्तम व्यक्तियों के संपर्क में रहने के अवसर प्राप्त होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान कराएँ। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम ४ रत्ती और अधिकतम ८-१० रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल दशम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर मैकेनिकल इंजीनियर, इलेक्ट्रानिक इंजीनियर, सैनिक, हथियार से जुड़े काम या विभागों से जुड़े कामों में कार्यरत होना आपको कष्ट दे सकता है। यह रत्न आपके सुख एवं यश को बाधित कर सकता है। आपमें नेतृत्व शक्ति की कमी आपकी सफलता को प्रभावित कर सकती है। मूंगा रत्न आपमें अत्यधिक जोश, साहस, ऊर्जा और उत्तेजना भाव को बढ़ाकर आपके द्वारा वाद-विवाद उत्पन्न करा सकता है। मूंगा रत्न से कार्यक्षेत्र में आपको लड़ाई झगड़ों की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। साहस की अधिकता व्यवसायिक क्षेत्र में आपको जोखिम पूर्ण क्षेत्रों में धन विनियोजन करा हानि दे सकती है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में मंगल षष्ठ भाव एवं आय भाव के स्वामी है। छठे भाव का स्वामित्व होने के कारण मंगल रत्न मूंगा धारण करना आपके लिए कुछ कष्टप्रद हो सकता है। मूंगा रत्न पहनना आपको नेत्रों से संबंधित रोग शीघ्र दे सकता है। आप कम मिलनसार हो सकते हैं। लड़ाई-झगड़ों से बचने का प्रयास करेंगे। आपत्ति आने पर आप अत्यधिक साहस भाव से काम लेंगे। जिसके कारण चोट आदि की स्थिति बन सकती है। यह रत्न आपको क्रोधी, सख्त बोलने वाले, रक्त विकारी एवं हठी बना सकता है। मूंगा रत्न आपको शत्रुओं द्वारा हानि दे सकता है। अप्रयाशित घटनाओं के कारण आर्थिक स्थिति में अस्थिरता बन



FUTUREPOINT
Astro Solutions



सकती है। आय क्षेत्रों में चोरी आदि का भय हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

शनि

(02/04/2011 - 09/10/2029)

शनि की दशा में आपका पन्ना, हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, गोमेद, माणिक्य, लहसुनिया व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध

(09/10/2029 - 09/10/2046)

बुध की दशा में आपका पन्ना, हीरा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, लहसुनिया, पुखराज, गोमेद व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु

(09/10/2046 - 09/10/2053)

केतु की दशा में आपका पन्ना, हीरा व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, नीलम, माणिक्य, मोती व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(09/10/2053 - 09/10/2073)

शुक्र की दशा में आपका पन्ना, हीरा, नीलम व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, गोमेद, माणिक्य व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(09/10/2073 - 09/10/2079)

सूर्य की दशा में आपका पन्ना व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, पुखराज, हीरा, नीलम, लहसुनिया व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(09/10/2079 - 09/10/2089)

चन्द्र की दशा में आपका पन्ना, मोती, हीरा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, पुखराज व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा व गोमेद रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(09/10/2089 - 09/10/2096)

मंगल की दशा में आपका पन्ना, हीरा, माणिक्य व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, पुखराज, नीलम व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने

हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(09/10/2096 - 10/10/2114)

राहु की दशा में आपका पन्ना, हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, पुखराज, माणिक्य, लहसुनिया व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(10/10/2114 - 10/10/2130)

गुरु की दशा में आपका पन्ना, पुखराज व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, नीलम, लहसुनिया, हीरा, गोमेद व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - पन्ना

आपका जन्म मिथुन राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी बुध होता है। बुध सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह सूर्य के सबसे अधिक नजदीक है और सूर्य ग्रहों का राजा होता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मिथुन राशि के लग्न वाले जातकों को मिथुन राशि के स्वामी ग्रह बुध को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। बुध ग्रह के लिये पन्ना रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी बुध राजकुमार व व्यापार का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज सम्मान की प्राप्ति तथा व्यापार में आशातीत लाभ व विद्यार्थियों को बुद्धिबल प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को बड़ी बहन, बुआ और मौसी का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। बुध ग्रह वाणी एवं बुद्धि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको वाणी दोष या आत्मविश्वास से संबंधित परेशानी हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा बुद्धि बल की प्राप्ति होती है जिससे विद्यार्थीगण अपनी परीक्षाओं में अच्छे अंकों से सफलता प्राप्त करते हैं।

पन्ना रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि कनिष्ठिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में बुध की अंगुली मानी जाती है। पन्ना रत्न बुध का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् बुधवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल बुध की होरा में श्रेष्ठ होता है। बुधवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय बुध की होरा का होता है। पन्ना को यदि बुधवार के साथ-साथ बुध के नक्षत्र अर्थात् आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

पन्ना को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर हरे रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, बुध के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

बुध का मंत्र - ॐ बुं बुधाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात् यदि बुध से संबंधित पदार्थ जैसे मूंग दाल, पीतल,

सवा मीटर हरे कपड़े का दान करें तो पन्ना रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन बुध का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और हिजड़ों को यथोचित समय-समय पर वस्त्र या पैसे आदि का दान करें तो यह पन्ना रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक बुधवार को गणेश जी की उपासना करें तथा गणेश जी को मोदक का भोग लगायें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

मिथुन लग्न वाले जातक यदि पन्ना रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मिथुन लग्न की हैं। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं आपका मस्तिष्क सदैव विचारमान व गतिमान रहता है इसलिए हर समय कुछ न कुछ आपके मस्तिष्क में चलता रहता है। लग्न स्वामी बुध होने की वजह से कठिन से कठिन काम को भी आप अपनी बुद्धि कौशल से आसान बना लेते हैं। द्विस्वभाव लग्न होने से आपके स्वभाव में भी दोहरापन (वास्तव में लचीलापन) होता है। समय के अनुसार अपने व्यवहार को बदल लेना अथवा हर परिस्थिति में स्वयं को ढाल लेना, वातावरण को अपने अनुसार ढाल लेना या स्वयं वातावरण के अनुसार ढल जाना आपके स्वभाव की विशेषता होती है। आपका व्यवहारिक ज्ञान अच्छा होता है। हर चीज को सीखने एवं पाने की ललक आप में रहती है। आप खाली नहीं बैठ सकते हैं। हर



FUTUREPOINT
Astro Solutions



समय व्यस्त रहना कुछ नया करने की इच्छा आपमें रहती है। आपका हँसमुख स्वभाव आपको हर जगह लोकप्रिय बनाता है।

6, 8, व 12 भाव त्रिक भाव के नाम से जाने जाते हैं। त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता है। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

मिथुन लग्न में छठे भाव व एकादश भाव के स्वामी मंगल हैं। आप अपने साहस का उपयोग अनैतिक कार्यों के लिए कर सकते हैं, मिथ्या वचन बोलने से भी आप बचे, तथा युद्ध अथवा लड़ाई हेतु सदैव तत्पर हो सकते हैं। शत्रुओं पर विजय प्राप्ति सहज हो जाती है। अपने बड़े भाई-बहनों से वैर-भाव रखने वाले हो सकते हैं। विष, अग्नि, शास्त्र सेपीडित हो सकते हैं।

अष्टम व नवम भाव के स्वामी शनि हैं। अष्टम भाव के स्वामी शनि के प्रभाव से आपके पिता के स्वास्थ्य में कमी, भाग्यवृद्धि में बाधक, अधिनस्थों की ओर से सहयोग में कमी, लम्बी अवधि के रोग, ऋण आपके कार्यों में व्यर्थ का विलम्ब कर सकते हैं। इस योग की अशुभता से रोजगार प्राप्ति में व्यवधान, धन संग्रह में बाधा का सामना करना पड़ सकता है।

पंचम भाव और द्वादश भाव के स्वामी शुक्र हैं। शुक्र पंचमेश व द्वादशेश होकर आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता है। इसके अतिरिक्त शुक्र व्यय, हानि, दंड व अलगाव दे सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	20/03/2084-21/05/2086 21/05/2086-08/02/2087	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	21/05/2086-21/05/2086 08/02/2087-18/07/2088 31/10/2088-05/04/2089	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	19/09/2090-25/10/2090 21/05/2091-02/07/2093	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
शुभ
शुभ
सम
सम

क्षेत्र

सन्तति सुख
भाग्योदय
व्यावसाय
अल्प बचत
स्वास्थ्य



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल चन्द्रमा के साथ है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं परन्तु चन्द्र लग्न से मंगल का दोष अधिक नहीं माना जाता है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव उत्पन्न रहेगा। साथ ही मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित मात्रा में विलम्ब भी हो सकता है तथा यदा कदा विवाह संबंधी वार्तालापों में व्यवधान आएंगे परन्तु अन्ततोगत्वा आपको सफलता मिलेगी। पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा मानसिक शान्ति भी बनी रहेगी।

चन्द्रमा के साथ मंगल की युति होने से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा साथ ही चतुर्थ भाव पर दृष्टि के कारण जीवन में आप भौतिक सुख संसाधन तथा जायदाद आदि भी प्राप्त करेंगे यद्यपि इसमें आपको थोड़ा परिश्रम अवश्य करना पड़ेगा। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। स्वभाव से वे तेज हो सकती हैं परन्तु इसमें कोई विशेष परेशानी नहीं होगी। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा व्यवधानों एवं समस्याओं का दृढ़ता पूर्वक सामना करके उनका समाधान करेंगे।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय एवं अनुकूल बनाने के लिए आपको किसी उचित मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाय। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस दोष के भंग होने पर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा इच्छित भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी साथ ही चल एवं अचल सम्पत्ति के भी स्वामी बनेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय एवं प्रसन्नता पूर्वक

व्यतीत होगा तथा धनऐश्वर्य से आप युक्त रहेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में तक्षक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को पैतृक धन सम्पत्ति का अभिलषित फल प्रायः प्राप्त नहीं होता है। पैतृक सम्पत्ति को या तो दान दे देता है या आंशिक रूप में नुकसान हो जाता है। प्रेम प्रसंग में आंशिक असफलता होती है एवं गुप्त प्रसंग से धोखा होने की संभावना अधिक रहती है। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक के अनेक शत्रु होते हैं और वे समय-समय पर पीड़ा पहुँचाते रहते हैं। जातक को साझेदारी के काम में नुकसान मिलता है।

इस योग के कारण जातक लालची प्रवृत्ति के, लाटरी, जुआ, सट्टा आदि के शैकीन हो जाते हैं। बनते कार्यों में थोड़ी बहुत रुकावटें आती हैं। कभी-कभी बड़ा पद मिलते-मिलते रह जाता है। किसी न किसी कारण से मानसिक परेशानी व चिन्ता पीछा नहीं छोड़ती। जातक को प्रायः पुत्र सन्तान का अभाव रहता है तथा कन्या से मानसिकता जुड़ती नहीं है। ऐसे व्यक्ति को अपने जीवन साथी के साथ सदैव समझौते का रुख अपनाना चाहिये तभी गृहस्थ जीवन विशेष रूप से सुखी रह सकता है।

इस योग के प्रभाव से इन्द्रिय जन्य गुप्त रोग जीवन में कभी-कभी परेशान करते रहते हैं। दूसरों को दिया हुआ पैसा प्रायः वापस नहीं आता है। फलस्वरूप जातक की आर्थिक स्थिति आंशिक रूप में नाजुक हो जाती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।

10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं । यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं । त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है । अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है ।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है । इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है । यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहयोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

गुरु

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र, सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन, वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

कन्या राशि में शनि हो तो जातक मितभाषी, परोपकारी, लेखक, कवि, सम्पादक, धनवान्, बलवान्, निश्चित कार्य कर्ता, ईर्ष्यायु स्वभाव, असभ्य, निर्बलस्वास्थ्य एवं पुराने विचारों वाला होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में प्रथम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। सामान्यतया मिथुन लग्न में उत्पन्न जातक विनम्र उदार एवं हास्य प्रवृत्ति के होते हैं तथा बुद्धिमता का भाव उनके चेहरे से ही परिलक्षित होता है। ये व्यक्ति स्वभाव से स्वाभिमानी होते हैं तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके उनमें इच्छित सफलता प्राप्त करते हैं। साथ ही अपने पराक्रम एवं परिश्रम के द्वारा इच्छित धनैश्वर्य एवं भौतिक सुख संसाधनों को भी अर्जित करते हैं। सरकार एवं उच्चाधिकारी वर्ग से इनका सम्पर्क रहता है तथा संगीत कला एवं व्यापार आदि के क्षेत्र में वे मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। इसके अतिरिक्त नवीन मूल्य या सिद्धांतों का भी ये प्रतिपादन करने में समर्थ रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि बनी रहेगी। अपने सांसारिक कार्य कलापों को आप बुद्धिमतापूर्वक सम्पन्न करेंगे तथा इनसे समाज में आपको सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होगी साथ ही स्वपरिश्रम एवं योग्यता के द्वारा ऐश्वर्य वैभव एवं धन अर्जित करके सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

मित्रों के प्रति आपके मन में पूर्ण निष्ठा होगी तथा आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा फलतः अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आप यत्नपूर्वक अपने सम्भाषण में मधुर वाणी का ही उपयोग करेंगे। अतः अपने गुणों के द्वारा आप समाज या कार्य क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में अपने आपको स्थापित करने में समर्थ होंगे।

लग्न में केतु की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा मानसिक अशान्ति उत्पन्न होगी। आप में तेजस्विता का भाव भी रहेगा जिससे आप न्यूनाधिक मात्रा में क्रोध का प्रदर्शन कर सकते हैं। परन्तु सांसारिक महत्व के कार्यों को आप सफल बनाएंगे तथा उन्नति एवं सफलता के मार्ग प्रशस्त करेंगे। साथ ही धनैश्वर्य से युक्त होंगे तथा आयस्रोत भी एक से अधिक रहेंगे।

आपके स्वभाव में उदारता का भाव भी होगा तथा अवसरानुकूल अन्य जनों को अपनी ओर से सेवा तथा सहयोग प्रदान करेंगे। अपने कार्यों को आप हमेशा सोच समझकर सम्पन्न करेंगे। यद्यपि आप में सहिष्णुता के भाव की न्यूनता रहेगी तथापि परस्पर सामंजस्य के कारण अन्य जनों से आप मित्रता पूर्ण संबंध बनाने में सफल रहेंगे। अपने कार्य क्षेत्र में आप दक्ष होंगे तथा समाज में भी सम्मानित व्यक्ति के रूप में जाने जाएंगे।

धर्म के प्रति आपकी सामान्य श्रद्धा रहेगी परन्तु अन्य जनों के परोपकार संबंधी कार्यों को सम्पन्न करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा जिससे अन्य जन आपसे प्रभावित दौरान आपकी- मित्रों की संख्या भी अधिक होगी।

इस प्रकार आप उत्साही, पराक्रमी एवं तेजस्वी पुरुष होंगे तथा जीवन में समस्त सुखों का उपभोग करते हुए अपना समय व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में कर्क राशि स्थित है जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप भावुक प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा यदाकदा अधिक बोलने वाली प्रवृत्ति भी रहेगी। समाज में आप एक सम्माननीय व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथायोग्य सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी वाणी भी मधुर होगी तथा अपने विचारों को आप स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने में समर्थ रहेंगे। फलतः सभी लोग आपकी वाणी से प्रभावित होंगे।

परिवार में सुख शान्ति तथा समृद्धि उत्तम रहेगी तथा परिवार की शान्ति तथा खुशहाली के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगे। साथ ही संतति से भी आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपको सुन्दर तथा स्वादिष्ट भोजन करना रुचिकर लगेगा। विशेष रूप से मिष्ठान के आप प्रिय रहेंगे तथा रुचिपूर्वक इनका भक्षण करेंगे लेकिन इससे यदा कदा आपको स्वास्थ्य संबंधी परेशानी भी हो सकती है अतः इनकी अधिकता की उपेक्षा करनी चाहिए। साथ ही धार्मिक उत्सवों को भी आप समय समय पर परिवार में आयोजन करते रहेंगे। आप अपने विचारों की पुष्टि में हमेशा ठोस तर्कों को प्रस्तुत करेंगे जिसे सभी लोग स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त लकड़ी के व्यापार से आप लाभ अर्जित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त पुत्रों का आपके प्रति विशेष स्नेह रहेगा तथा आपकी सेवा में वे सर्वदा तत्पर रहेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा शनि भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको वांछित सुखसंसाधनों एवं आधुनिक भौतिक उपकरणों की प्राप्ति होगी परंतु इसमें आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा तथा किंचित विलम्ब का भी सामना करना पड़ेगा परंतु इससे आपको निराश नहीं होना चाहिए तथा अपने कार्यों में तत्पर रहना चाहिए। इससे समाज में आपके स्तर में अनुकूलता बनी रहेगी।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व आपको अवश्य प्राप्त होगा। आप एक बुद्धिमान एवं परिश्रमी व्यक्ति होंगे अतः अपने इन्हीं गुणों से भी चल एवं अचल सम्पत्ति अर्जित करेंगे। किसी वृद्ध व्यक्ति से भी आपको सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है जिससे आपके ऐश्वर्य एवं समृद्धि में वृद्धि होगी लेकिन जीवन में आपको कभी भी विवादित सम्पत्ति का क्रय-विक्रय नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है।

आपको स्वपरिश्रम पराक्रम एवं सौभाग्य से उत्तम गृह की प्राप्ति होगी परंतु प्रारंभ में आप किसी सामान्य गृह में ही निवास करेंगे लेकिन युवावस्था के बाद आपको उत्तम आवास अवश्य मिलेगा तथा किसी अच्छी कालोनी में होगा। आपके पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे परंतु आपसी संबंधों में भी मधुरता कम ही होगी

आपकी माता बुद्धिमता शिक्षित एवं व्यावहारिक महिला होंगी तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से सबको प्रसन्न तथा प्रभावित रखेंगी परंतु यदा-कदा वे तेजस्विता के भाव का भी प्रदर्शन कर सकती है लेकिन यह अल्पकालिक होगा। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको नैतिक एवं आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी परंतु आपसी संबंधों में मतभेदों के कारण मधुरता का भाव अल्प मात्रा में ही होगा। अतः आप दोनों को परस्पर सामंजस्य स्थापित करना चाहिए।

अध्ययन के प्रति यद्यपि प्रारंभ से ही आपकी रुचि होगी परंतु इसमें अच्छे अंक अर्जित करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा। अतः स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने में आपको अत्यधिक परिश्रम एवं बुद्धिमता का परिचय देना पड़ेगा। यदि आप किसी तकनीकी परीक्षा का डिप्लोमा आदि करें तो इसमें आपको इच्छित मात्रा में सफलता मिलेगी तथा परिश्रम भी कम करना पड़ेगा। इससे आपके आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा स्वजनों एवं अन्य लोगों से पूर्ण प्रोत्साहन एवं आदर मिलेगा।

नैसर्गिक पाप ग्रह शनि की चतुर्थ भाव में स्थिति के कारण युवावस्था के बाद आपको न्यूनाधिक मात्रा में रक्तचाप या हृदय संबंधी कष्ट हो सकता है। अतः यदि आप प्रारंभ से ही उचित खान पान रखें तथा रक्त एवं हृदय को प्रभावित करने वाले पदार्थों का सीमित मात्रा में उपयोग करें तो उपरोक्त समस्या से आपको मुक्ति मिल सकती है। अतः खान-पान पर अवश्य नियंत्रण रखना चाहिए।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में तुला राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से सम्पन्न करेंगे। इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे साथ ही कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान आप अपनी बुद्धि से करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र में भी आपकी रुचि होगी तथा इन ग्रंथों का अध्ययन करके वांछित मात्रा में ज्ञान अर्जित करेंगे। बुध के प्रभाव से साहित्य या कविता लेखन, गणित एवं ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान भी आपको होगा तथा इस क्षेत्र में कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि भी अर्जित कर सकते हैं जिससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा एक विद्वान के रूप में आपकी प्रतिष्ठा होगी।

शुक्र की राशि की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी परंतु आपका प्रेम आदर्शवाद एवं मर्यादा की सीमा में होगा तथा इसको आप केवल मनोरंजन या समय व्यतीत करने का समाधान नहीं मानेंगे। अतः आपका प्रेम प्रसंग विवाह के रूप में भी परिवर्तित हो सकता है जिससे आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा संतति में कन्याओं की संख्या पुत्र से अधिक होगी लेकिन सभी बच्चे बुद्धिमान एवं गुणवान होंगे तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से जीवन में उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता पिता के वे आज्ञाकारी होंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को माता पिता की सलाह से ही सम्पन्न करेंगे जिससे परस्पर सद्भाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति उनमें विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्या का समाधान माता से ही करवाना अधिक पसंद करेंगे लेकिन मान सम्मान एवं श्रद्धा का भाव माता पिता के प्रति समान रूप से रहेगा।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चे आशातीत उन्नति करेंगे तथा अच्छे अंको से अपनी परिक्षाओं को उत्तीर्ण करके उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करेंगे। वे उच्च पदों पर भी नियुक्त हो सकते हैं। इसके वे स्वभाव से विनम्र एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अन्य सामाजिक जन भी उनसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे जिससे आपके सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। अपने बच्चों पर आपको गौरव होगा तथा वे भी वृद्धावस्था में आपकी श्रद्धा पूर्वक सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा राहु भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया सप्तम भाव में धनु राशि के प्रभाव से जातक का सहयोगी स्वस्थ धनवान एवं सांसारिक कार्यों में कुशल होता है परन्तु राहु के प्रभाव से वह उग्र पराक्रमी गंभीर एवं भौतिकतावादी होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी गंभीर एवं तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी तथा परिश्रम पूर्वक सांसारिक कार्यों को करने में तत्पर रहेगी तथा अपने कार्य कलापों को वह कुशलता से सम्पन्न करेंगी। वह व्यावहारिक रूप से अपना समय व्यतीत करेंगी नीचस्थ राहु के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता के भाव में न्यूनता रहेगी।

आपकी पत्नी श्याम वर्ण की आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा शारीरिक संरचना की दृष्टि से राहु की प्रभाव से दुर्बलता एवं पतलापन रहेगा लेकिन अंग प्रत्यंग पुष्ट एवं सुडौल होंगे इससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी एवं व्यक्तित्व भी आकर्षक बनेगा जिससे अन्य लोग उनसे प्रभावित होंगे सौन्दर्य वृद्धि के लिए वह सीमित रूप से सौन्दर्य प्रसाधनों का भी उपयोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कला आदि में भी रुचि रहेगी तथा सुंदर वस्तुओं के संग्रह में प्रवृत्त होंगी।

सप्तम भाव में नीचस्थ राहु के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कुछ वार्ताएं भी असफल होंगी आपका विवाह विज्ञापन द्वारा होगा। लेकिन स्वेच्छा से आप प्रेम या अंतर्जातीय विवाह भी कर सकते हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं आपस में प्रेम तथा आकर्षण की कमी की अनुभूति होगी साथ ही पत्नी की उग्र प्रवृत्ति के कारण वाद विवाद भी होते रहेंगे अतः यदि आप शांति संयम एवं बुद्धिमता से कार्य नहीं लेंगे तो दाम्पत्य जीवन में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा यदि बुद्धिमता से कार्य लिया गया तो मधुर संबंधों की स्थापना हो सकती है।

आपका विवाह किसी साधारण परिवार में होगा तथा उनकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति मध्यम ही रहेगी सास ससुर से भी संबंधों में विशेष मधुरता नहीं रहेगी तथा उनसे कोई विशेष सहयोग नहीं मिलेगा। साथ ही आपस में सम्मान एवं स्नेह का भाव भी कम ही रहेगा।

आपकी पत्नी का भी सास ससुर के प्रति सेवा एवं सम्मान की भावना कम ही रहेगी तथा सुख दुख में वे उनका यथोचित ध्यान नहीं रखेंगी। साथ ही देवर एवं ननद भी उनके उग्रस्वभाव से परेशान रहेंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति प्रतिकूल रहेगी तथा इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी अतः जीवन में साझेदारी के विचार को त्यागना ही श्रेय कर रहेगा।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्मसमय में दशमभाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। साथ ही बुध भी दशम भाव में स्थित है। मीन राशि जलतत्व युक्त तथा बुध ग्रह पृथ्वीतत्व से युक्त है अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र श्रमसाध्य होने के साथ साथ वैदिकता से भी युक्त होगा। कार्यक्षेत्र में आप समयानुसार परिवर्तन के भी इच्छुक होंगे तथा ऐसे परिवर्तनों से आपको समय समय पर वांछित लाभ एवं उन्नति प्राप्त होती रहेगी जिससे मानसिक सन्तुष्टि मिलेगी।

बुध की दशम भाव में स्थिति के प्रभाव से आजीविका की दृष्टि से आप के लिए लिपिकीय कार्य, लेखन, साहित्य, चित्रकारी, जिल्दसाजी, शिक्षक, ज्योतिषी पुस्तक विक्रेता, सम्पादन, संशोधन आदि वकील, संदेश वाहक (दूत) राजदूत, टेलीफोन आपरेटर आदि कार्य शुभ एवं अनुकूल रहेगे यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों में अपना कार्यक्षेत्र बनाएंगे तो इनमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त क्षेत्र ही अपनी आजीविका के लिए चयन करना चाहिए।

वाणिज्यकारक ग्रह बुध के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में आपको वांछित सफलता की प्राप्ति होगी। आपके लिए व्यापारिक दृष्टिकोण से पुस्तकों का क्रय विक्रय या प्रकाशन कार्य, अगरबत्ती, पुष्प मालाएं, कागज के खिलौने, किसी एंजेसी अथवा कमीशन का कार्य, कला एवं चित्रकारीका स्वतंत्र कार्य तथा यंत्रों के निर्माण का कार्य विशेष शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इन क्षेत्रों में व्यापार करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभार्जन होगा जिससे आपकी सन्तुष्टि बनी रहेगी।

लग्नेश एवं चतुर्थेश बुध की दशम भाव में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित मान सम्मान की प्राप्ति होगी तथा स्वपराक्रम एवं योग्यता से आप प्रतिष्ठा एवं यश अर्जित करने में भी समर्थ होंगे परन्तु बुध की नीच स्थिति के प्रभाव से इसमें न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब एवं व्यवधान भी आ सकते हैं परन्तु इससे आपको विचलित नहीं होना चाहिए तथा परिश्रम एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त महत्वपूर्ण संस्थाओं या संस्था में भी आप किसी सम्माननीय पद को अर्जित कर सकते हैं।

आपके पिता बुद्धिमान योग्य एवं मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा अपने उत्तम कार्यकलापों से सामाजिक जनों का प्रभावित करने में समर्थ होंगे फलतः उनकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा दीक्षा का समुचित प्रबंध करके आपको योग्य बनाएंगे। आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका मुख्य योगदान होगा तथा उनके प्रभाव से भी आप प्रचुर मात्रा में लाभ एवं उन्नति अर्जित करेंगे। आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं आज्ञाकारिता का भाव होगा एवं उनकी सेवा करने में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथापि नीचस्थ बुध के प्रभाव से परस्पर संबंधों में किंचित तनाव हो सकता है लेकिन यह क्षणिक होगा तथा



FUTUREPOINT
Astro Solutions



परस्पर सामंजस्य स्थापित करने में समर्थ होंगे ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि नवम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु दशम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि दशम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुद्वादश भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि लग्न स्थान में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि द्वितीय भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि लग्न स्थान में आ जाएगी।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टि से देखें तो वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरुग्रह के गोचरीय प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ प्राप्त नहीं होगा। आपको अपने व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अतः इस समय के अन्तराल में कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ न करें, पहले से चले आ रहे व्यापार को ही सुव्यवस्थित ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है।

मई के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपको अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। लग्न स्थान के गुरुनयी विचारधारा नयी योजनाओं को जन्म देंगे जिसका लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में और उन्नति करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान के गुरुधनागम में रुकावट उत्पन्न करेंगे, जिससे आर्थिक उन्नति में कमी हो सकती है। इस समय के अंतराल में निवेश न करें और न ही ऋण दें, नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है। मातुल पक्ष से लाभ प्राप्त होगा।

गुरुग्रह के गोचर के बाद समय शुभ हो रहा है। उस समय आपका रुका हुआ धन वापस मिल सकता है। सप्तम स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा या आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में इनका पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में चतुर्थ स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परन्तु 29 मार्च के बाद माता-पिता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

गुरुग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी।

सप्तम स्थान पर गुरुएवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान का गुरुसंतान सम्बन्धित कुछ चिन्ताएं दे सकता है परन्तु मई के बाद लग्नस्थ गुरु के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चे निरन्तर आगे बढ़ेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करेंगे एवं उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश होगा।

नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भधान हेतु समय शुभ है। दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का गुरुआपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना सकते हैं। मधुमेह रोगियों को अधिक परहेज की आवश्यकता है। गुरुग्रह के पृथ्वी तत्व राशि में होने के कारण संक्रामक या पेट संबंधित परेशानियां हो सकती हैं।

मई के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या को अनुशासित रखेंगे। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में षष्ठ स्थान पर गुरुएवं शनि की संयुक्त दृष्टि के कारण प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अच्छी सफलता मिलेगी। वर्ष के प्रारम्भ में बेराजगारों को रोजगार की प्राप्ति हो सकती है।

मई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। आप पढ़ाई लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो सकता है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वादशस्थ गुरुविदेश यात्रा के शुभ योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में विदेश यात्रा होगी।

मई के बाद नवम स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि लम्बी यात्रा के योग बना रही है। तृतीय स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि छोटी-मोटी यात्राएं कराती रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप दान-पुण्य, गरीबों को भोजन, भिक्षुओं को भिक्षा, धार्मिक अनुष्ठान इत्यादि अधिक करेंगे। मई के बाद आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा एवं पूजा पाठ में रुचि लेंगे। गुरुजनों व वरिष्ठ लोगों का सम्मान करें व उनके उपदेशों का पालन करें।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें अष्टम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु लग्न स्थान में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमेंद्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें तृतीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत उत्तमरहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनिग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे जिससे आपकी आय में वृद्धि होगी। लग्न स्थान का गुरु नवीन विचार धारा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने नयेव्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं औरकम समय में उत्तम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। साझेदारी या शेयर बजार में आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

02 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आपको वरिष्ठ लोगों या बड़े अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगाजिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। धन संचय करने में आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी। 02 जून के बाद आपको रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपको रुके हुए पैसे मिल सकते हैं। इस वर्ष आपके परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले होथों से खर्च करेंगे। निवेश में उत्तम फल मिलने की सम्भावना है।

31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर तृतीय स्थान में होगा। उस समय सामाजिक व धार्मिक कार्यों पर आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनिग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। यदि आप विवाह के योग्य है तो विवाह हो सकता है।

02 जून के बाद परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोतरी हो सकती है। आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा। पिताजी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। 31 अक्टूबर के बाद आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि से आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है। यदि आपकी सन्तान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है। उसको अपने कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त होगी। इस वर्ष आप के बच्चे अच्छे काम करेंगे। आप अपने बच्चों पर गर्व करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में हमेशा सकारात्मक विचार आएंगे जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे एवं अपनी दिनचर्या भी सही रखेंगे। यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

25 नवम्बर के बाद राहु ग्रह का गोचर अष्टम स्थान में हो रहा है। उस समय अचानक आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः वर्षान्त में अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना अधिक जरूरी है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है।

पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। 02 जून के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्त होगी। जिन जातकों की नौकरी अभी तक नहीं लगी है, 02 जून के बाद उन लोगों को नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी।

द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से यात्राओं के प्रबल योग बन रहे हैं। 02 जून के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे और 31 अक्टूबर के बाद आपकी

छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आप गुरु मन्त्र लेकर साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। 02 जून के बाद मन्त्र सिद्ध व गुप्त विद्याओं की ओर आपका रुझान बढ़ेगा।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके समने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्रणायाम करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि दशम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं दशम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष अष्टम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत बढ़िया रहेगा। दशम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने कार्य क्षेत्र में अच्छा सफलता प्राप्त करेंगे। बड़े अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से कुछ गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट उत्पन्न करने की कोशिश कर सकते हैं। आप अपने विवेक से उन पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे।

26 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके आय के स्रोत में वृद्धि होगी। व्यापारिक व्यक्तियों को इस समय के अंतराल में अच्छा लाभ होगा। आपको मित्रों का भी भरपूर सहयोग मिलेगा। यदि आप अपने भाई के साथ कार्य कर रहे हैं तो बहुत अच्छा उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यापारियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आर्थिक संपन्नता बनी रहेगी। रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। व्यापारिक अनुकूलता से आपकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा। इस समय के अंतराल में आप इच्छित निवेश करेंगे। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके कुछ अनावश्यक खर्च भी हो सकते हैं।

26 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम के स्रोत में वृद्धि होगी। कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाईयों का अहम सहयोग होगा। मांगलिक कार्यों में भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं। 26 नवम्बर के बाद आपको भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का पूर्वार्द्ध पारिवारिक रूपसे अच्छा रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके

परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक-दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनी रहेगी। परिवार में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। भाइयों का सहयोग मिलता रहेगा। अष्टम स्थान का राहु आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध खराब कर सकता है।

26 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। गर्भाधान के लिए समय अच्छा चल रहा है।

26 जून से आपके दूसरे बच्चे के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। इस समयान्तराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। आपकी शारीरिक उर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहें। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करें जिससे आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आप कभी कभी छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। परन्तु गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप जल्दी अच्छे हो जाएंगे। 26 नवम्बर से आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने कारण आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। विद्यार्थियों के लिए यह समय शुभ रहेगा।

26 जून के बाद तकनीकी शिक्षा या व्यापार के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है। परन्तु 26 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

26 नवम्बर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। पर्यटन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। यात्रा करते समय सावधान रहें क्योंकि अष्टम स्थान का राहु अचानक दुर्घटना दे सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शान्ति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्य के लिए बढ़िया रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 26 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 26 नवम्बर के बाद अपने परिवार में सुख, शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्तों को रोटी में गुड़ डालकर खिलाएं या राहु ग्रह का ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सं राहवे नमः मन्त्र का जाप करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यवसाय के लिए उत्तम रहेगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके कार्यों में कुछ विरोधी या गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं।

वर्षारम्भ में उन्नति के लिए नये नये तरीके अपनाएं। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे। प्रोपर्टी डीलर या कमीशन पर कार्य करने वाले व्यक्तियों की उन्नति होगी। सप्तम स्थान का राहु साझेदारी में कार्य करने वालों के लिए अच्छा नहीं है।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से भूमि, भवन व वाहन इत्यादि का सुख मिलेगा। भौतिक सुख-सुविधाओं पर आप अधिक खर्च करेंगे। फरवरी के बाद आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। निवेश के लिए समय काफी अच्छा चल रहा है परन्तु अष्टम स्थान का राहु कभी कभी अनावश्यक खर्च करा सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी आर्थिक उन्नति में आपके भाईयों एवं परिवार के लोगों का पूर्ण सहयोग होगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। आपका पत्नी के स्वास्थ्य पर भी पैसा खर्च हो सकता है। इस अवधि में वसीयत इत्यादि मिलने की भी संभावनाएं बन रही हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। चतुर्थ स्थान का गुरु पारिवारिक सुख प्रदान करने वाला है। पूरे परिवार में सुख शांति का वातावरण बना रहेगा। मांगलिक कार्य संपन्न होने के योग बन रहे हैं। परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो सफलता प्राप्त हो सकती है।

28 फरवरी के बाद गुरु के तृतीय भाव में गोचर करने से आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार के कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाओं को चोट पहुंच सकती है। अतः अच्छा यही है कि विपरीत परिस्थितियों के लिए अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति

विकसित करें। 24 जुलाई के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। सप्तमस्थ राहु आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

संतान

यह वर्ष संतान की तरक्की के योग लेकर आ रहा है। शिक्षा के लिए समय बहुत अनुकूल हो रहा है। परिवार की उन्नति के लिए आपकी संतान नवीन योजनाएं बनाएं।

संतान के साथ प्रेम व समन्वय में मधुरता आएगी। घर का वातावरण उत्तम होने के साथ-साथ सामाजिक सम्मान बढ़ेगा। 24 जुलाई के बाद का समय आपके लिए शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में स्वास्थ्य बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। स्वास्थ्य संबंधी किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

तनाव कम करने के लिए इस अवधि में आप अपने मन को एकाग्र कर योग क्रियाएं कर सकते हैं। इससे उत्साह का संचार होगा और आप अपने को स्वस्थ बनाए रखने में कामयाब रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर के लिए उत्तम रहेगा। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार करेंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अपने अंदर में की भावना ना आने दें। 23 फरवरी के बाद समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए विशेष शुभ है। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपके माता-पिता को धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए स्थानान्तरण के प्रबल योग बने हुए हैं। यह परिवर्तन आपके हित में होगा। 28 फरवरी के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी।

24 जुलाई के बाद आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष यदि किसी तीर्थयात्रा या कोई धार्मिक कार्य करने जा रहे हैं तो



FUTUREPOINT
Astro Solutions



उसको योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा धार्मिक कार्य में असफलता या पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। 24 जुलाई के बाद पूरे परिवार के साथ कोई विशेष धार्मिक आयोजन जैसे- भगवती जागरण इत्यादि कर सकते हैं।

- भगवान गणेश व माँ दुर्गा की आराधना करें।
- गौ सेवा करें व अपने भोजन का पहला भाग गाय को खिलाएं।
- राहु मन्त्र का जाप करें या राहु की वस्तुओं का दान करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशीर्ष होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में ही आप कोई नया व्यापार शुरू करेंगे जिसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा। उच्चअधिकारियों या वरिष्ठ लोगों की सहयोग मिलती रहेगी। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। 29 मार्च से आपके कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान आ सकता है। शत्रु व विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती है।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर व्यावसायिक जीवन में समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। व्यापारिक व्यक्ति अपने कर्मचारियों व नौकरों पर विशेष ध्यान देना चाहिए नहीं तो सप्तमस्थ राहु के कारण अचानक वे आपका साथ छोड़ सकते हैं। साझेदारी में काम करने वाले व्यक्ति अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम होगा। आय भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह का संयुक्त गोचरीय प्रभाव धनागम के स्रोतों में वृद्धि करेगा। नये व्यापार से भी शीघ्र लाभ होने के योग हैं। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। 29 मार्च से पारिवारिक सदस्यों के स्वास्थ्य पर धन का व्यय होगा जिससे आर्थिक उन्नति रुक सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। मांगलिक कार्य व पुत्रादि के विवाह के अवसर पर भी धन का व्यय हो सकता है। सट्टा, लॉटरी, या शेयर इत्यादि से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थस्थ मंगल के प्रभाव से आपका पारिवारिक माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार से जुड़े हर मामलों में बहुत सावधानी

बरतने की आवश्यकता है। आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध खराब हो सकता है। 29 मार्च के बाद आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थितियां उत्पन्न होंगी। अतः अच्छा यही होगा कि विपरीत परिस्थितियों से लड़ने के लिए आप अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें।

25 अगस्त से आपका घरेलूम वातावरण अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। परिवार में सदस्यों की बढ़ोत्तरी होगी। 05 अक्टूबर के बाद आपके प्रेम संबंधों में मधुरता आएगी। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। गर्भ धारण का अच्छा समय है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वह अपने बुद्धि एवं विवेक के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे परन्तु 29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के योग बन रहे हैं। उनके पराक्रम में वृद्धि होगी। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आपका यश बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन करेंगे।

29 मार्च के बाद स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। गुरु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। 25 अगस्त के बाद शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने का पूर्ण प्रयास करेंगे फिर चोट चपेट या दुर्घटना की स्थिति बन रही है। अतः कोई भी कार्य करते समय एकाग्रता बहुत जरूरी है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठतम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में कुछ उपलब्धी प्राप्त करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी समय उत्तम है। करियर में भी अच्छी सफलता मिलेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थी सफल होंगे परन्तु 29 मार्च के बाद करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यवसायिक रूप से भी समय अच्छा नहीं रहेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



05 अक्टूबर के बाद बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलेगी। रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। 08 अगस्त के बाद विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

यात्रा के दौरान छोटी-मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। समय-समय पर आप गरीबों की सहायता करेंगे। वर्षान्त में मन्त्र साधना भी कर सकते हैं।

- शनिवार के दिन काली वस्तु या काला कम्बल मजदूरों या गरीबों में दान करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।
- अपने माता-पिता की सेवा करें एवं अपने से बड़े लोगों का सम्मान करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(02/04/2011 - 09/10/2029)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में यह 02/04/2011 को आरम्भ और 09/10/2029 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि चौथे भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है। यह विलम्ब और बाधक ग्रह के रूप में जाना जाता है, किन्तु अन्ततः फल देता है। यह फल की प्राप्ति के लिए जातक को कठिन परिश्रम के हेतु प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है। आपकी जन्मकुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि छठे, दसवें और प्रथम भाव पर है। चतुर्थ भाव, जिसमें यह स्थित है, जन्म स्थान, मनोरंजन, रोमान्स, धार्मिक प्रवृत्ति तथा आध्यात्मिक कार्य का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

चतुर्थ भाव में स्थित महादशा स्वामी शनि अपने भाव अर्थात् 'सुखस्थान' को शक्ति प्रदान कर रहा है। इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और कोई बीमारी नहीं होगी।

धन-सम्पत्ति :

मातृ भूमि, मकान और माता के द्योतक चतुर्थ भाव में स्थित शनि के कारण आपको घर का सारा सुख मिलेगा। इस दशा के दौरान आप अपना नया मकान तथा नयी गाड़ी खरीद सकते हैं।

व्यवसाय :

व्यावसायिक स्तर पर आपकी स्थिति अत्यंत सुदृढ़ होगी क्योंकि चौथे भाव में स्थित बली और योगकारक शनि की कार्य-व्यवसाय के दसवें भाव पर दृष्टि है। आप एक सरकारी सलाहकार अथवा मंत्री या उपदेशक हो सकते हैं। आप धनी, प्रतिष्ठित, सुखी और ऐन्द्रिय सुखों के प्रति आकर्षित होंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सुखी होगा और आप उसका आनन्द लेंगे। आपको हर प्रकार से आनन्द मिलेगा। आपके बच्चे कम किन्तु आज्ञाकारी होंगे। धार्मिक प्रवृत्ति के होने के बावजूद आप इस दशा के दौरान पारिवारिक जीवन का आनन्द लेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा, ज्ञान तथा साहित्यिक वृत्ति के विकास के लिए अत्यन्त अनुकूल है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions





FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

महादशा :- बुध
(09/10/2029 - 09/10/2046)

बुध की महादशा 09/10/2029 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 09/10/2046 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध दशम भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के कारण सन्तान से सुख और शत्रु पर विजय मिली होगी तथा कार्य स्थान में स्थिति अनुकूल रही होगी। बुध की इस दशा में आप को यश तथा ख्याति मिलेगी, जीवन में प्रगति होगी, सम्मान और उत्तम शिक्षा मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपमें भरपूर शक्ति, उत्साह तथा क्रियाशीलता रहेगी। मौसम में परिवर्तन के कारण हल्का ज्वर, विषाणु जन्य संक्रामक बीमारी, त्वचा रोग तथा स्नायविक दुर्बलता हो सकती है। अधिक मानसिक तथा शारीरिक श्रम से बचे।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। व्यवसाय तथा व्यापार से आय में वृद्धि होगी। जमीन-जायदाद से भी आय में वृद्धि होगी। आपको माता-पिता से लाभ मिल सकता है। सट्टे में लेन-देन लाभदायक होगा। जीविकोपार्जन के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर तथा हाथ से बने सामानों का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सम्मान मिलेगा, आय में वृद्धि होगी तथा वरिष्ठ कर्मचारियों और उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और अधीनस्थ कर्मचारियों तथा सहकर्मियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। व्यापार में विस्तार तथा व्यवसायियों के कार्य-क्षेत्र में वृद्धि होगी। आर्थिक तथा व्यावसायिक समृद्धि के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित लेन-देन लाभदायक होगा। चल-अचल सम्पत्ति से लाभ मिलेगा। वाहन सुख भी मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा तथा सूर्य की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी। कार्य के सिलसिले में यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा अति उत्तम होगी। आपकी शैक्षिक उपलब्धि आपकी जीविका की संभावना में वृद्धि करेगी। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा व्यापार के विषय में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है। आपका दिमाग विवेक पूर्ण व विश्लेषणात्मक है और आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। आपके जीवन साथी की अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और सुख की प्राप्ति होगी। आपका जीवन साथी के साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता की विदेश यात्रा, साझेदारों से लाभ तथा आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। आपके पिता का धन-संग्रह और सुख की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के कार्य में शुभ परिवर्तन और अचानक लाभ मिलेगा जबकि बड़ों का शुभ उद्देश्य के लिए व्यय होगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध अति उत्तम रहेगा। इस दशा के दौरान आपको यश, सम्मान तथा सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको व्यवसाय में सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में धन और समृद्धि की प्राप्ति होगी जबकि सूर्य को अन्तर्दशा में व्यय तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के कारण हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा और कुछ बाधाएं हो सकती हैं। राहु की अन्तर्दशा में कुछ बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप बच्चों से सुख मिलेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



**अंतर्दशा :- बुध - बुध
(09/10/2029 - 07/03/2032)**

आपके लिए बुध की महादशा 09/10/2029 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बुध की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 27 दिन होगी। आपके लिए यह 09/10/2029 को प्रारंभ होकर 07/03/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, स्मृति और वाणी का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। कार्यों में और कार्यालय में सफलता मिलेगी। उद्देश्य के प्रति सजग रहेंगे; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। धनलाभ, प्रसिद्धि और शत्रुओं पर विजय की संभावना है। लेखनकार्य के लिए शुभ समय है। विज्ञान, गणित और व्यापार में दक्षता बढ़ेगी। घरेलू सुख और समृद्धि का योग है। बहुत से मित्र बनेंगे। अचल संपत्ति और वाहन क्रय कर सकते हैं।

आपके जीवनसाथी को घरेलू सुख मिलेगा। आपके पिता को कार्यों में सफलता मिलेगी; पारिवारिक सुख रहेगा। माता को साझेदारी से लाभ होगा, नया व्यापार प्रारंभ कर सकती हैं।

आपके भाई-बहनों के लिए विविध लाभ, ज्ञान-विज्ञान में सक्रियता, यात्रा और मामूली बाधाओं का संकेत है। आपकी संतान का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; स्पर्धियों पर सफलता पाने के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो नौकरी से या मामा पक्ष के लोगों से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सौभाग्यशाली रहेंगे; उच्चपद प्राप्त हो सकता है। परामर्शदाताओं को लाभ होगा। व्यापारियों को पहले किये निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। मामूली गठिया आदि की शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए समाजसेवी संस्था में दान दें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions

